रात्रिक्लास ओमशान्ति शिवबाबा याद है? 5-2-68

तुम बच्चों के पास जो समाचार है दुनिया मे और कोई के पास नहीं हैं। भल कितने भी अखबार आद पढ़ते हैं सब गपोड़े ही मारते हैं। एक बाप ही सत्य बताते हैं। बड़े2 महर्षि आद क्या करते हैं यह सभी रिद्धि-सिद्धि हैं। दांत खराब हो तो योगबल से दांतों को देखने से अच्छी हो जाती। ऐसे तो ढेर हैं। बच्चे समझ सकते हैं यह तो बेहद की दुनिया को बदलने की बातें हैं। ऐसे ऐसी2 बातों में मनुष्य कितनी दिलचस्पी लेते हैं। वह महर्षि को कहते हैं हमारी आपदा मिटा दो। महर्षि फिर उन्हीं को कहते हैं तुम खाते-पीते चलो फिर आप ही आपदा मिट जावेगी। कितने बेसमझ पत्थर बुधि हैं। सतयुग मे हैं पारस बुधि सतोप्रधान। कलियुग में पत्थरबुधि तमोप्रधान। क्या सुख दे सकते हैं। याद सभी मनुष्य मात्र एक को ही करते हैं। शिवबाबा ही सब का बाप है। सिवाय बाप के बाकी सभी धर्म नाट अपेनी हैं। देवता तो कोई है नहीं। बच्चे जानते हैं अभी सतयुग है नहीं। सतयुग के लिए हम पढ़ते हैं। बाबा है ही सतयुग स्थापन करने वाला। बेहद के बाप से जरूर सतयुग का वर्सा मिलेगा। भल कहे 40हजार पीछे बाप आवेंगे सतयुग बनाने। यह भी बतावे ना जब बाप आवेंगे तब ही हम वर्सा पावेंगे। इस समय नई दुनिया के लिए तुम नई बातें सुनते हो। बाप कहते हैं नई दुनिया में चलना है तो पवित्र बनना है। बाप सभी मनुष्य मात्र के लिए कहते हैं। मनुष्य से देवता बनेंगे। और धर्म होंगे ही नहीं। अपना पुरुषार्थ करते चलो। औरों का भी कल्याण करते चलो। सर्विस वृधि को पाती रहेंगी। सेन्टर्स खुलते रहते हैं। कई सेन्टर्स हैं जहां ऐसे भी हैं जो अपना भी कुछ कल्याण नहीं करते हैं। प्रपञ्ची न खुद समझेंगे न दूसरों को समझावेंगे। न समझने देंगे। और ही तंग करते हैं। कहते हैं हम किसको सुख पाने न देंगे। ऐसे2 भी हैं। जिसको खाऊ खबर कहा जाता है। तुम डाग से गाड बनते हो। गाड पढ़ावे फिर भी डागपना दिखावे तो क्या कहेंगे। भस्मासुर होते हैं ना। न खुद समझते हैं न दूसरों को शान्ति मे रहने ही देते हैं। कहा जाता है न आओ तो भी लड़ने लग पड़ते हैं। ऐसे2 असुर यज्ञ मे विघ्न डालते हैं। वह क्या वर्सा पावेंगे। बाबा की मुरली तो सभी सुनेंगे। 6-2-68रात्रिक्लास:-बहुत महारथी हैं जो मुरली मिस कर देते हैं। कब बाहर गये तो वह मुरलियां पढ़ते ही नहीं। मैगजीन भी बहुत बच्चे हैं जो नहीं पढ़ते हैं। यह भी बच्चे समझते हैं कि तैयारियां हो रही है। विनाश होगा जरूर। स्थापना तो होनी ही है। निश्चय है हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। हम ही रावण पर जीत पहन रहे हैं। चलते2 बच्चे कैसे ठंढे पर जाते हैं फिर ब्राह्मणी समझाती है बेहद का बाप वर्सा देने आये हैं तुम गफ्लते करते हो। तो फिर खड़े हो जाते हैं। ऐसे बहुतों की अवस्था ऊपर-नीचे होती है। माया की ग्रहचारी लगती है तो किसको समझा न सकेंगे। इसमें तो शोक रहना चाहिए। यहतो जरूर ब्राह्मण कर फिर चले गये वह फिर स्वर्ग में तो जरूर आवेंगे। मुक्ति में तो जाना वहां से पहले सुख भोगना है। बाप सभी को सुख का वर्सा देते हैं। सभी को वापस जाना है। इसको शान्ति कहा जाता है। हरेक को अपने को देखना है कहां तक हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। हम स्वर्ग में जा रहे हैं यह तो खुशी की बात है ना। सिर्फ पुरुषार्थ करना है। जो करेंगे सो पावेंगे। टीचर का काम है पढ़ाना। जो डिपलिंग होगा वह कब न कब आवेंगे जरूर। अपने2 समय पर सभी आते हैं कल्प पहले मिशल। वृधि को पाते रहते हैं। गीतापाठशाला खोलते रहते हैं। हार्ट-फेल न होना है। आते2 नामाचार निकलेगा। बच्चे सेकण्डव सेकण्ड पुरुषार्थ कर रहे हैं। पुरुषार्थ हरेक सुख के लिए करते हैं। जो जितना कर सकते हैं उतना करते रहते हैं। तुमको तो बहुत खुशी होनी चाहिए जब किसमझते हो हमको भगवान पढ़ाते हैं। भगवान स्टुडन्ट को पढ़ाते हैं। कोई की बुधि में नहीं बैठता तो टीचर क्या कर सकते। वर्ल्डकी हिस्ट्री जागरफी भी पढ़ते हैं। याद की यात्रा है मुख्य। लिखते हैं बाबा तूफान बहुत आते हैं। बाबा कहते हैं माया बड़ी दुस्तर है। परन्तु यह बताने में भी बहुतों को लज्जा आती है। हम स्वर्ग के बादशाही स्थापन कर रहे हैं। कितना उत्साह होना चाहिए। इसमें गुप्त पुरुषार्थ चलता है। फूल बनना है। हम अरोबर कांटे थे अब दैवी फूल बन रहे हैं। तो अपनी जांच करनी चाहिए। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का याद प्यार गुडनाईट। ओम